



Original Article

बेरोजगारी का दस्तावेज: सोलह सौ किलोमीटर

जयश्री वाघमारे

शोधार्थी, हिंदी विभाग एवं हिंदी अनुसंधान केंद्र,

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, धाराशिव, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, छत्रपती संभाजी नगर,
 महाराष्ट्र, भारत.

Manuscript ID:

IJAAR-C130329

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 145 - 149

Submitted: 22 Jan. 2026

Revised: 30 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

जयश्री वाघमारे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785758

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785758>



Creative Commons



सार:

रूपनारायण सोनकर जी उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध दलित लेखक हैं। प्रस्तुत 'सोलह सौ किलोमीटर' उपन्यास में उन्होंने समाज में चली आ रही शैक्षिक समस्याएँ, पारिवारिक समस्याएँ, स्वास्थ्य समस्याएँ, किसान समस्याएँ, महानगरीय समस्याएँ, ग्रामीण समस्याएँ, युवकों की समस्याएँ, धार्मिक समस्याएँ, जातीय समस्याएँ, बेरोजगारी की समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, रूढ़ी परंपरा एवं दलित समाज के ऊपर हो रहे अन्याय एवं अत्याचार के कई प्रसंग इसमें प्रस्तुत किये हैं। इस के साथ साथ बेरोजगारी की समस्या के भी कई प्रसंग संक्षेप में प्रस्तुत किए गए हैं।

मुख्य शब्द: बेरोजगारी, दलित जीवन, सामाजिक-आर्थिक समस्या, अन्याय -अत्याचार, संघर्ष, विरोध।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

जयश्री वाघमारे. (2026). बेरोजगारी का दस्तावेज: सोलह सौ किलोमीटर. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 145 - 149. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785758>

भूमिका:

समकालीन हिन्दी दलित साहित्य में रूपनारायण सोनकरजी ने एक चर्चित कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार एवं एक सफल अभिनेता के रूप में अपनी

पहचान बना ली है। सोनकरजी बेहद संवेदनशील, जुझारू, और परिश्रमी लेखक हैं। वे दलित समाज और दलित साहित्य को गौरव प्रदान करनेवाले एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा और विलक्षण व्यक्तित्व ने दलित समाज एवं साहित्य



का सिर ऊँचा किया है। सोनकरजी अपनी एक विशिष्ट एवं नयी दलित शैली के लिए प्रसिद्ध है। हिंदी दलित साहित्यकारों में खुलकर लिखने का प्रारंभ सही मायने में सोनकरजी ने ही किया है। इनकी अभिव्यक्ति दलितों में एक नयी चेतना निर्माण करती है। 'उनके कहानी संग्रह जहरीली जड़ें (प्वाइजनस् रूट्स), डंक, सुअरदान, गटर का आदमी उपन्यास एवं अनेक नाटकों, कविताओं के बाद 'नागफनी' यह आत्मकथा एक महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है। आज तक अनेक दलित लेखकों ने अपने नीजि जीवन को ज्यादा महत्व अपने लेखन में दिया है लेकिन सोनकरजी ने सामाजिक दृष्टिकोण को मद्देनजर रखते हुए दलितों की व्यथा को वाणी देने का सफलतापूर्वक कार्य किया है। 'नागफनी' इस आत्मकथा में लेखक ने दलित जीवन की सामाजिक, आर्थिक और मानसिक चुनौतियों का मार्मिक चित्रण है।¹

सोलह सौ किलोमीटर यह एक ऐसा उपन्यास है जो देश की निरीह जनता को प्रगति के पथ पर ले जाने हेतु प्रेरित करता है। दालीतों, पिछड़ों और गरीब सवणों को अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। उनकी अस्मिता, स्वाभिमान और गौरव को जगाता है। हिन्दी साहित्य में बेरोजगारी, आर्थिक तंगी और शिक्षित युवाओं के संघर्ष को प्रमुखता से चित्रित करने वाले कई उपन्यास उपलब्ध हैं। इनमें अखिलेश का 'अन्वेषण', नासिरा शर्मा का 'ज़ीरो रोड़', और राजेन्द्र यादव का 'सारा आकाश' प्रमुख हैं। ये उपन्यास नौकरी के अभाव में मध्यमवर्गीय परिवारों की हताशा और संघर्ष को दर्शाते हैं। हिन्दी में उपलब्ध इन उपन्यासों में लेखकों ने मुख्य रूप से जिन समस्याओं को प्रस्तुत किया है, उनमें प्रमुख हैं - रोटि की समस्या, कपड़ा और मकान की समस्या तथा सबसे प्रमुख समस्या है जातिवाद इन सारी समस्याओं को प्रस्तुत किए हैं। इसके साथ-साथ शैक्षिक समस्याएँ, पारिवारिक समस्याएँ, स्वास्थ्य समस्याएँ, किसान समस्याएँ, महानगरीय समस्याएँ, ग्रामीण समस्याएँ, युवकों की समस्याएँ, धार्मिक

समस्याएँ, जातीय समस्याएँ, बेरोजगारी की समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, रूढ़ी परंपरा एवं दलित समाज के ऊपर हो रहे अन्याय एवं अत्याचार को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 2024 में सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा किया गया है। इस उपन्यास को पढ़ते हुए एक अजीब सी बेचैनी होती है। उपन्यासकार जातिवाद के साथ ही अनेक समस्याओं का वर्णन किया है। यही कारण है कि लेखक समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन चाहता है। सामंतशाही और ब्राह्मणवाद का खात्मा ही लेखक का अंतिम उद्देश्य है। जब तक समाज में ऊँच-नीच, गैर बराबरी, अस्पृश्यता की भावना विद्यमान है तब तक सामाजिक समरसता, समानता और भाईचारे की चर्चा करना बेकार है। उपन्यास 'सोलह सौ किलोमीटर' की माध्यम से लेखक ने दलित समाज का सच और सवणों की मानसिकता उनके षडयंत्र, फरेब, अहंकार तथा शोषण को उजागर किया है। 'सोलह सौ किलोमीटर' का प्रयोजन दलितों के स्वाभिमान और सम्मान को पुनर्स्थापित करना है और इसमें उनको सफलता भी मिली है। इस उपन्यास में बेरोजगारी की समस्या दलित को अन्याय-अत्याचार से सहने नहीं बल्कि उसका मुकाबला करने हेतु है। अतः इसमें सोनकरजी अपनी माता बहनों की इज्जत एवं गरिमा को सुरक्षित रखने में कामयाब होते हैं। 95 पृष्ठों में लिखित इस उपन्यास में विविध प्रसंग या घटनाओं को लेखक ने प्रस्तुत किया है जो हर एक घटना या प्रसंग पढ़ने के बाद मन में एक बेचैनी सी उत्पन्न हो जाती है और पाठकों को सोचने के लिए मजबूर कर देती है। उपन्यास का प्रारंभ लेखक ने कोरोना वायरस महामारी से मुंबई जैसे शहर के एकाएक फैक्ट्री बंद होने की वजह से लोग अपने गाँव वापस लौटने कि कठीण परिस्थिति का वर्णन किया है। इसी कारण इस उपन्यास का नाम 'सोलह सौ किलोमीटर' रखा गया है। सेवालाल प्रजापति, भरोसेलाल पासी, दुलारी भारद्वाज, सनसनी सिंह, शहजाद आलम और गौरव धनगर इस उपन्यास के पात्र हैं। जो सभी अलग-अलग जाति के शिक्षित बेरोजगार



पांच युवक और एक युवती की मुंबई जैसे शहर में काम की तलाश में गाँव से पलायन करते हैं।

पलायन करने के कई कारण हैं जिनमें प्रमुखता से बेरोजगारी की समस्या शामिल है। उपन्यास में बेरोजगार युवाओं की कठिनाइयों को दर्शाया गया है रोजगार न मिलने के कारण वह अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते इससे गरीबी कर्ज और जीवन स्तर में गिरावट जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं यह आर्थिक सुरक्षा दर्शाता है। मानसिक तनाव और निराशा से भी लगातार असफलताओं के कारण युवाओं में आत्मविश्वास की कमी, अवसाद और हताशा बढ़ती है। पलायन की मजबूरी से रोजगार की तलाश में युवाओं को अपने गाँव घर से दूर शहरों की ओर जाना पड़ता है यह पलायन सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करता है और पारिवारिक संबंधों पर भी असर दिखता है। सामाजिक असमानता से यह भी स्पष्ट किया गया है कि अवसरों की कमी और संसाधनों का सामान वितरण बेरोजगारी को और गहरा करता है। शिक्षित युवा भी नौकरी के लिए भटकते दिखाई देते हैं। वह गाँव में कई कठिनाइयों का सामना करके मुंबई शहर में रोजगार मजदूरी के लिए वह एक फैक्ट्री में काम करते हैं और एक साथ रहते हैं। 'लेकिन कोरोना वायरस महामारी के समय एक दूसरे के बदन को छूना मौत को गले लगाना जैसा है। इसलिए पाँचों मित्र दुलारी भारद्वाज से दूरी बनाकर रखते हैं। कोरोना वायरस के कारण मुंबई में वे लोग जहाँ रहते हैं, चारों तरफ मौत का सन्नाटा है। उसके दूसरे दिन सूचना मिलती है कि इस फैक्ट्री के दूसरी जगह रह रहे 21 मजदूर में से सात की मृत्यु हो जाती है। मजदूर में हाहाकार मच जाता है। सभी मजदूर पैदल ही अपने-अपने घरों को जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। एक हफ्ते बाद दुलारी की कमजोरी ठीक होने के बाद सभी पार्टनर अपने गाँव की ओर प्रस्थान कर देते हैं। मुंबई से उत्तर प्रदेश जाने वाले हाईवे का दृश्य आश्चर्यचकित कर देने वाला है। अपने-अपने घर जाने वाले मजदूरों की कतार लगी है।'²

गौरव धनगर की टोली एक सौ किलोमीटर तक का सफर सफलतापूर्वक काट लिया है। सेवालाल प्रजापति, भरोसेलाल पासी, दुलारी भारद्वाज, सनसनी सिंह, शहजाद आलम और गौरव धनगर सभी रास्ते में चलते-चलते अपनी-अपनी भविष्य की योजनाएँ बताते हैं। जब रास्ता लंबा हो, यदि आपस में बातें होती हैं तो रास्ता आसानी से कटता जाता है। मौन होकर चलने से रास्ता कठिन लगता है। इसी वजह से वह बेरोजगारी के चलते बेरोजगारी के ऊपर मात करने के लिए अपनी-अपनी योजनाओं के बारे में बातें करते हैं।

पहले सेवालाल प्रजापति अपनी भविष्य की योजना बताता है। "मैं मिट्टी के कुल्हड़, बर्तन आदि बनाने का कारखाना खोलूंगा। मैं गांवों, कस्बों, तहसील और जिले के बेरोजगार युवाओं को नौकरी दूँगा।"³

भरोसेलाल पासी ने आगे बताया कि "मैं अपने गाँव में सूअरों के बालों की फैक्ट्री खोलूंगा। सूअरों के बाल बहुत कीमती होते हैं। देश-विदेश में उनकी मांग सबसे ज्यादा है। फिर इनको विदेश में सप्लाई करने की योजनाएँ बताता है।"⁴

सनसनी सिंह बोला "मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी जमीन पर एक डेयरी फार्म खोलूँ, सरकार से लोन लेकर।" और उसी से संबंधित योजनाओं के बारे में बताता है।"⁵

शहजाद आलम ने कहा- "मैं आपको ग्रामीण भारत से जुड़ी एक ऐसी योजना का बखान करूँगा जो बहुत लोगों को रोजगार दे सकती है।" मुगल बादशाह ने खुश होकर मेरे पूर्वजों को कई एकड़ जमीन तोहफे में दी थी। बेचने के बाद अभी छः एकड़ जमीन गाँव के नजदीक बची है। उसी में, मैं एक बकरी फार्म खोलूँगा। बकरों के मीट की डिमांड ग्रामीण और शहरी भारत में बहुत ज्यादा है। ग्रामीण भारत की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में यह योजना एक मील का पत्थर साबित होगी।"⁶ इस योजना के बारे में विस्तृत रूप से बताता है।

दुलारी भारद्वाज बोली – "मेरा प्लान है कि मैं गाँव पहुंच कर एक बूटीक शॉप के साथ-साथ एक लॉज स्केल में



एक टेलरिंग शॉप खोलूं मैं आप लोगों को विस्तार से बताती हूं। मैं गाँव के बच्चों, लड़कों, लड़कियों, स्त्रियों और पुरुषों के लिए कपड़े उपलब्ध कराऊँ। उनकी मर्जी पर उनको कपड़े सिलकर दूँ।”⁷

गौरव धनगर सभी मित्रों से कहता है कि “यह विज्ञान का युग है। मैं बैंकों से लोन लेकर मैं तीन हजार वर्ग मीटर जमीन पर “डॉक्टर आंबेडकर साइंस एंड टेक्नोलॉजी सेंटर” खोलूंगा। यूनिवर्सिटी के रिटायर प्रोफेसरों को इस संस्था का पार्ट बनाऊंगा। सरकारी मदद से “डॉक्टर आंबेडकर कला, विधि और विज्ञान यूनिवर्सिटी” बनाऊंगा। इस विश्वविद्यालय में कला, विज्ञान, विधि की पढ़ाई होगी। म्यूजिक, खेल, जूडो-कराटे की भी सभी को शिक्षा दी जाएगी। इस तरह डॉक्टर आंबेडकर के सपनों का भारत बनाया जाएगा।”⁸

ज्यों-ज्यों योजनाएँ बढ़ती जा रही थीं, त्यों-त्यों लंबा रास्ता कम होता जा रहा था। योजनाएँ सभी को प्रभावित कर रही थीं। सड़क भी हमारी योजनाओं को सुनकर बहुत ही प्रफुल्लित हो रही थी। सड़क में बहुत गड्ढे थे। वह अपने गड्ढों पर आंसू बहा रही थी। मजदूरों का दुःख-दर्द इन गड्ढों में भरता जा रहा था। मानवों को हिम्मत न हारने की नसीहत प्रकृति अपने प्राकृतिक इशारों से देती है। उनको प्रोत्साहित करती है। सड़क के किनारे कंटीले वृक्ष खड़े मिलते हैं। वहीं पर फूल खिलते हैं जो सड़क पार कर रहे हैं मजदूरों को आगे बढ़ने की नसीहत प्राकृतिक भाषा में देते हैं। इस प्रकार सोलह सौ किलोमीटर उपन्यास केवल संघर्ष का नहीं है, बल्कि उससे उबरने की प्रेरणा भी देती है। लेखक यह संदेश देता है कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद साहस, परिश्रम और दृढ़ निश्चय से बेरोजगारी जैसी समस्या पर विजय पाई जा सकती है। उपन्यास का शीर्षक ‘सोलह सौ किलोमीटर’ भी संघर्ष और लंबी यात्रा का प्रतीक है - यह केवल भौतिक दूरी नहीं, बल्कि जीवन के संघर्षों की दूरी को भी दर्शाता है। ‘सोलह सौ किलोमीटर’ में बेरोजगारी को केवल व्यक्तिगत असफलता नहीं, बल्कि

सामाजिक - आर्थिक व्यवस्था की देन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके प्रमुख कारण हैं जनसंख्या वृद्धि, शिक्षा और रोजगार में असंतुलन, औद्योगिक और ग्रामीण विकास की कमी, आर्थिक समानता, भ्रष्टाचार और सिफारिश प्रथा आदि को प्रस्तुत किया है।

अंत में लेखक ने बेरोजगारी की समस्या का एक कारण शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार और सिफारिश प्रथा का एक उदाहरण लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में दिया है- “ग्रामीण भारत का मेहनती युवा जो उच्च शिक्षित हैं चारों तरफ नौकरी पाने के लिए दौड़-धूप करता है, फिर भी नौकरी नहीं पाता है। वह गाँव में चल रहे प्राइवेट स्कूलों, कॉलेजों में मास्टर की नौकरी करने लगता है। वहाँ पर भी उसका बहुत शोषण होता है। यदि उसको पंद्रह हजार रुपए प्रतिमाह नौकरी में रखा जाता है तो उसको मात्र साढ़े सात हजार रुपए ही मिलते हैं। वेतन रजिस्टर में पंद्रह हजार रुपए पर उससे हस्ताक्षर कराए जाते हैं। उच्च शिक्षित युवाओं की मजबूरी का फायदा उठाया जाता है। उनका शिक्षा के क्षेत्र में इस तरह शोषण किया जाता है। सरकारी मान्यता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों, कॉलेजों में दलित विद्यार्थियों का भी बहुत शोषण किया जाता है। उनको सरकार द्वारा वजीफा दिया जाता है, प्रिंसिपल उनमें से एक बटा चार धनराशि ले लेता है। दलित विद्यार्थियों को धमकी दी जाती है- “यदि आप लोग पैसा नहीं देंगे तो वजीफा नहीं मिलेगा।” देहातों में चल रहे बहुत सारे कॉलेजों, डिग्री कॉलेजों में नकल माफिया सक्रिय रहते हैं। वे विद्यार्थियों को नकल कराने का ठेका ले लेते हैं। वे 25, 50 हजार रुपए प्रति विद्यार्थी वसूल करते हैं। परीक्षा के समय एक्सपर्ट नकल करने वाले विद्यार्थी परीक्षा में बैठा दिए जाते हैं। उनको नकल करने की सामग्री उपलब्ध करा दी जाती है। बगैर परीक्षा दिए विद्यार्थी बी.ए., एम.ए. की डिग्री प्राप्त कर लेते हैं। माफिया गिरोह हमारे ग्रामीण भारत के नौजवानों का भविष्य बर्बाद कर रहे हैं। इसी कारण नौकरियों में पारदर्शिता की कमी,



सिफारिश और भ्रष्टाचार के कारण योग्य उम्मीदवार भी वंचित रह जाते हैं।”⁹

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के अतिरिक्त ऐसे बहुत सारे प्रसंग लेखक ने उपन्यास ‘सोलह सौ किलोमीटर’ में प्रस्तुत किए हैं जिसमें लेखक भ्रष्टाचार का विरोध सरेआम करते हैं तब प्रस्थापित व्यवस्था उसका चाहते हुए भी विरोध नहीं कर पाती है। अतः अंत में यही कहा जा सकता है कि, दलितों पर होते हुए अन्याय-अत्याचार के साथ समग्र समाज पर हो रहे अन्याय-अत्याचार के विरोध में आवाज उठाई गई है। यही तो निरालापन इस उपन्यास का है, इस उपन्यास में लेखक ने जिन-जिन प्रथाओं एवं बातों का विरोध किया है उसको उन्होंने समूल नष्ट करने का प्रयास किया है। उनके इस कार्य की वजह से समाज के समग्र दलितों की सामाजिक परिस्थिति में निश्चित रूप से बदलाव आया है ऐसा हम कह सकते हैं।

शोध अध्ययन का उद्देश्य:

‘सोलह सौ किलोमीटर’ समकालीन भारतीय समाज का यथार्थ परक उपन्यास है, जिसमें 21वीं सदी की सबसे गंभीर समस्या — बेरोजगारी को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह कृति दिखाती है कि कैसे रोजगार की कमी व्यक्ति को आर्थिक, सामाजिक और मानसिक रूप से प्रभावित करती है। 21वीं सदी के बेरोजगारी संकट को एक **सामाजिक और साहित्यिक दृष्टि से समझना**। रूपनारायण सोनकर के उपन्यास ‘सोलह सौ किलोमीटर’ को **यथार्थ दस्तावेज़** के रूप में विश्लेषित करता है। समाज, युवा वर्ग और साहित्य के बीच संबंध की गहराई का अध्ययन करना और उसको समाज के सामने प्रस्तुत करना अध्ययन का उद्देश्य है।

निष्कर्ष:

‘सोलह सौ किलोमीटर’ केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि 21वीं सदी के भारत का सामाजिक दस्तावेज़ है। यह बताता है कि बेरोजगारी केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक संरचना से जुड़ी गहरी चुनौती है। यह उपन्यास बेरोजगारी, प्रवासन और दलित जीवन की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं पर केंद्रित है। कोरोना वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए लगाए गए लॉकडाउन ने कई उद्योगों को बंद करने के लिए मजबूर कर दिया है, जिससे पूरे देश में बेरोजगारी बढ़ गई है इसी कारण लेखक ने ‘सोलह सौ किलोमीटर’ उपन्यास के माध्यम से 21वीं सदी में बेरोजगारी की समस्याएँ और दलितों पर हो रहे अन्याय एवं अत्याचार के साथ उसके विरोध में किये संघर्ष को चित्रित किया गया है।

संदर्भ सूची:

1. नागफनी, रूपनारायण सोनकर, भूमिका से।
2. सोलह सौ किलोमीटर, रूपनारायण सोनकर, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली 2024 पृ. 32।
3. वही, पृ.36।
4. वही, पृ.37।
5. वही, पृ.38।
6. वही, पृ.39।
7. वही, पृ.40।
8. वही, पृ.41।
9. वही, पृ.53।